# पंचम अध्याय

## उपसंहार

## उ प सं हा र

नये युग के उपन्यासकारों में मन्नू मण्डारी का अपना अलग ही स्थान है। स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में जिन महिला साहित्यकारों के नाम सामने आते हैं, उनमें मन्नूजी का नाम सर्वप्रथम आता है। मन्नू मण्डारी जी ने उपन्यास, कहानी, एवं नाटक इन तीन विधाओं में अपनी सफल लेखनी का परिचय दिया है।

मन्नू मण्डारी का जन्म ३ अप्रैल १९३१ को मध्यप्रदेश में स्थित भानपुरा नामक एक छोटेसे गाँव में हुआ। मन्नूजी के पिता का नाम श्री सुखसंपतराय मण्डारी और माता का नाम अनूपकुंवरि था। उनका संयुक्त मारवाडी परिवार था। श्री सुखसंपतराय हिन्दी पारिभाषिक शब्दकोश के आदि निर्माता थे। मन्नूजी के भाई-बहनों की संख्या चार है। उनके दो भाई और दो बहने हैं। मन्नू मण्डारी का विवाह राजेन्द्र यादवजी के साथ १९५९ में हुआ।

नारी अपने जीवन में माँ, बेटी, बहन, पत्नी आदि भूमिकाएँ निभाती है। मन्नूजी ने यह भूमिकाएँ अच्छी तरह से निभायी हैं। इन्हीं भूमिकाओं के साथ मन्नूजी लेखिका तथा अध्यापिका की भी भूमिका निभा रही हैं।

श्रीमती मन्नू मण्डारी का हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में सबसे पहला प्रवेश कहानी लेखिका के रूप में हुआ। उनके प्रमुख प्रकाशित कहानी संकलन हैं 'मैं हार गई', 'तीन निगाहों की तस्वीर', 'यही सच है', 'एक प्लेट सैलाब', 'त्रिशंकु', 'आँखों देखा झूठ' कहानियों के बाद मन्नू का विशेष महत्व एक कुशल एवं सजीव, सामयिक जीवन के जीवन्त यथार्थ पर आधारित उपन्यास लेखिका के रूप में निरन्तर सामने आ रहा है। इनकी उपन्यास लेखन प्रतिभा के प्रथम दर्शन हुए थे 'एक इंच मुस्कान' नामक उपन्यास में, जो इन्होंने अपने पति श्री राजेन्द्र यादव के साथ मिलकर लिखा था। इस के बाद इनके 'आप का बंटी' नामक उपन्यास को भी विशेष मान, महत्व और ख्याति प्राप्त हुई। इनका एक और उपन्यास 'स्वामी'

जिसपर ` स्वामी ` नामक फिल्म बनी ।` कलवा` इनका एक प्रमुख उपन्यास है । ` महाभोज ` इनका प्रमुख एवं बहुचर्चित उपन्यास है, जिसमें आज की राजनीतिक विडम्बनाओं का अत्यन्त कुशल एवं मार्मिक चित्रण किया गया है ।

उपन्यास ,नाटक और कहानी इन तीन विधाओं को ग्रहण करनेवाली मन्नू जी ने अपने साहित्य में यथार्थ `. को अभिव्यक्त किया है । जिसके कारण उनकी रचनाएँ सफल और लोकप्रिय हुयी हैं । जिसके परिणामस्वरूप हिन्दी साहित्य में मन्नू जी अपना विशेष नाम,स्थान और महत्व अर्जित कर सकीं ।

` महाभोज ' उपन्यास में चित्रित राजनीतिक समस्याओं का विवेचन करते समय जो प्रमुख राजनीतिक समस्याएँ सामने आती हैं, उन्हें निम्नलिखित उपशीर्षकों में रेखांकित किया गया है ।

(१) भारतीय राजनीति एवं गांधीवाद और सांस्कृतिक मूल्य --

माना जाता है कि भारतीय राजनीति गांधीजी के तत्वों के आधार पर चलती है । लेकिन आज भारतीय राजनीति सत्ता की राजनीति बन गयी है । राजनीतिक नेता गांधीवादी विचारधारा को अपनाने का ढोंग कर रहे हैं और जानबूझकर गांधीवादी विचारों को भूल गए हैं । भारतीय संस्कृति और परंपरा को भूल कर लोगों की धार्मिक भावनाओं का अपने स्वार्थ के लिए गलत इस्तेमाल किया जा रहा है । इस राजनीतिक यथार्थ का अंकन प्रस्तुत उपन्यास में सफलता के साथ हुआ है ।

(२) राजनीति एवं राष्ट्रनिष्ठा का ढोंग --

राजनीतिक लोग अपने स्वार्थ के लिए राष्ट्रनिष्ठा का किस तरह ढोंग करते हैं, राष्ट्रनिष्ठा का ढोंग करके, राजनीतिक नेता चुनाव जीतने में किस तरह कामयाब होते हैं इस बात का आयना है ` महाभोज ` ।

(३) राजनीति एवं कफन खसोट गिद्ध --

राजनीति में कफन खसोट गिद्धों की कमी नहीं है। चाहे दा साहब हो या मुकुल बाबू, राव हो या चौधरी। ये गिद्धों की ऐसी जात है जो अपने तथा अपनों के हीत के लिए,अपनी कफन खसोटी वृत्ति के कारण पूरे समाज को, आम जनता को एक लावारिस लाश की तरह नोच-नोच कर खा जाना चाहते हैं।

(४) राजनीति एवं स्वार्थांध नेता --

राजनीति में कोई आदर्श नेता नहीं रह गया है। अपने स्वार्थ के लिए यह नेता जनता को बाँटकर रखते हैं, कभी जात की दीवार खडी करके तो कभी वर्ग की। आदमी और इन्सानियत का नाता ही इन लोगों ने तोड दिया है। चाहे हत्या हो,आगजनी हो या किसी बेगुनाह की गिरफ्तारी हो इन लोगों के लिए साधारण बन गई है। आज की राजनीति में स्वार्थांधता का प्राबल्य दिखाई देता है। देश तथा जनता का हित नेताओं की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण नहीं रहा है। इसी हकीकत को बयान किया गया है महाभोज के माध्यम से।

(५) राजनीति एवं गुंडागर्दी --

राजनीतिक लाभ उठाने के लिए राजनीतिक लोग अपने कुछ गुंडे रखते हैं। 'महाभोज' में दा साहब ने जोरावर जैसे गुंडे का सही इस्तेमाल किया है। राजनीति गुंडागर्दी के निकट चली गयी है यही अंकित किया गया है।

(६) राजनीति एवं अन्याय की शिकार आम जनता --

राजनीतिक लोगों ने अपने राजकीय स्वार्थ के लिए आम जनता पर होने वाले अन्याय की ओर जानबुझकर ध्यान नहीं दिया है। बिन्दा और बिसू इन लोगों के अन्याय के शिकार बन गए हैं। बिन्दा और बिसू के माध्यम से लेखिका ने आज की राजनीति के शिकार होने वाले आम लोगों का ही उदाहरण दिया है।

(७) राजनीति एवं नौकरशाही --

`महाभोज' में यह भी अंकित किया है कि किस तरह राजनीतिक नेता लोग बड़े अफसरों का उपयोग अपने स्वार्थ के लिए करते हैं। इमानदार अफसर को दबाव का तंत्र अपनाकर अपना इमान बेचने पर मजबूर किया जाता है। राजनीति में सरकारी अफसरों के कार्य पद्धति में राजकीय हस्तक्षेप।

(८) राजनीति एवं नारेबाजी --

चुनाव जीतने के लिए नारेबाजी का उपयोग लोगों के मनपर अपना नाम थोंपने के लिए राजनीति में किराये के आदमी लेकर नारों का प्रयोग किया जाता है और सत्ता की कुर्सी हथियाने की कोशिश की जाती है।

(९) राजनीति एवं चुनावी दाँवपेंच --

राजनीतिक नेता लोग कभी पैसे देकर, कभी झूठे आश्वासन देकर तो कभी सरकारी योजनाओं का लालच दिखाकर,तो कभी किसी प्रसंग को जिन्दा रखकर चुनाव जीतने में कामयाब होते हैं।

(१०) राजनीति एवं चापलुसी --

राजनीति में चापलुसी करनेवाले लोगों की कमी नहीं है। चापलुसी तो राजनीति का एक अंग बनी हुयी है। ऐसे चापलुसों की नीति का पर्दाफाश करने का काम लेखिका ने सफलता के साथ किया है।

(११) राजनीति एवं अंधविश्वास के शिकार नेता --

राजनीतिक नेता लोग अपने को समाज का,आम जनता का नेता समझते हैं। लेकिन ये नेता लोग अंधश्रद्धाओं और कुप्रथाओं का स्वीकार करते है। नेता लोग मंत्र-तन्त्र का सहारा लेते हैं। राजनीतिक नेता अंधविश्वास के शिकार बने हुए हैं।

(९२) राजनीति एवं शासन सत्ता --

झूठ बोलकर सत्ताधारी पक्ष सत्ता कायम रखने में कामयाब होते हैं। विरोधी पक्ष पर किचड उछालते रहते हैं। चुनाव के दौरान झूठे आश्वासन देकर चुनाव जीतने की कोशिश की जाती है।

(९३) राजनीति एवं विरोधी दल --

राजनीतिक नेता कभी भी सत्ता से बचे रहे ये तो कभी हो ही नहीं सकता। उन्हें कुर्सी के बिना नींद ही नहीं आती। विरोधी दल सत्ताधारी पक्ष पर किचड उछालकर ,लोगों को झूठे आश्वासन देकर सत्ता की कुर्सी हथियाने की कोशिश करते हैं। लोकतंत्र में विरोधी दल का महत्व भी अनन्य साधारण रहता है परंतु ' महाभोज ' में सत्ताधारी नेताओं पर जिस प्रकार करारा व्यंग्य कसा है उसी प्रकार विरोध दल के नेताओं को भी अपनी नीतियों पर विचार करने के लिए बाध्य बनाया है।

(९४) राजनीति एवं सत्तापरिवर्तन ( आशा - निराशा ) --

राजनीति में सत्तापरिवर्तन होता रहता है। लेकिन जनता जान गयी है कि सत्तापरिवर्तन होने से कुछ नहीं होने वाला है। समाज में जैसी स्थिति है वैसी ही रहने वाली है। शोषण,अन्याय और अत्याचार कभी खत्म नहीं होनेवाले हैं। इसका चित्रण करने में लेखिका सफल हुई है।

(९५) राजनीति एवं प्रचार माध्यम --

चुनाव जीतने के लिए लोगों को किसी योजना का लालच दिखाया जाता है। पोस्टर निकाले जाते हैं, और उस पर नेता लोगों की तस्वीर भी छापी जाती है। पदयात्रा,साईकिल रैली जैसी रैलियाँ निकालकर चुनाव में प्रचार का माध्यम बनाया जाता है।

(१६) महाभोज एवं समकालिन राजनीति --

मन्नू भण्डारी का ` महाभोज ` उपन्यास शतप्रतिशत समकालीन राजनीतिक वातावरण का चित्र उपस्थित करता है । जब उपन्यास लिखा गया उस समय में राजनीति का स्वरुप इतना बीभत्स एवं घृणामय हो गया था कि उसमें मानवमूल्यों और मानव जीवन का कोई महत्व ही नहीं था और आज तो स्थिति उससे भी कई ज्यादा भयावह बन गयी है ।

` महाभोज ` में चित्रित जो राजनीतिक समस्या मेरे सामने आती है उन्हें प्रस्तुत करने का मैंने प्रयास किया है ।

वस्तुत: ये सारी बातें समस्याएँ नहीं हैं, केवल स्थितियाँ हैं जो समग्र रूप से समाज के सामने,राष्ट्र के सामने ऐसे भयानक परिणामों को जन्म देती हैं,उनका निदान प्राप्त करना असंभव हो जाता है । और इन सारी स्थितियों के उपचार की आवश्यकता जब समाज अनुभव करता है,तब ये विकट समस्या का रूप ग्रहण कर लेती है ।

स्वतंत्रता के साथ ही बाह्य रूप से भले ही परतंत्रता की बेड़ियाँ टूटी बिखरी हो, आंतरिक रूप से भारत एक प्रकार से गुलाम ही बना रहा । अंग्रेजों के स्थानपर भारतीय शासक बने । लेकिन सत्य यह है कि उनकी कुर्सियाँ वहीं रहीं,जमींदार, गुंडे,अमीर लोग एक प्रकार के बेताज बादशाह बन गये । जनता गरीब होती गई और उनके प्रतिनिध अमीर होते गए । आज स्वतंत्रता के बाद भी इसमें कुछ परिवर्तन नहीं हुआ ।

` महाभोज ` राजनीतिक उपन्यास होने के कारण इसमें राजनीतिक समस्याओं का चित्रण हुआ है । इसके साथ-ही-साथ सामाजिक समस्याओं का भी चित्रण हुआ है । राजनीतिक नेता लोग बड़े स्वार्थी हैं । इन स्वार्थी राजनीतिक लोगों के कारण समाज में अन्याय और अत्याचार बढ रहे हैं । सिर्फ सत्ता की

कुर्सी हथियाने या कायम रखने की कोशिश में राजनीतिक समस्याओं ने कितना बीभत्स रूप धारण किया है ,यह दिखाई देता है । समाज में अन्याय और अत्याचार बढ रहे हैं । स्वार्थी राजनीति,भ्रष्ट नौकरशाही,अशिक्षित सामान्य जनता, समाज के हत्यारे इनके कारण सामाजिक समस्या ने भयानक रूप धारण किया है । प्राय: ऐसा माना जाता है कि किसी देश की राजनीतिक परिस्थिति जिस प्रकार की हुआ करती है,सामाजिक परिस्थितियों का स्वरूप स्वत: ही तदनुकूल बन जाया करता है । महाभोज में चित्रित सामाजिक समस्याएँ निम्नांकित है --

१) महाभोज में शोषण --

`महाभोज` उपन्यास में यह देखा जाता है कि जोरावर जैसा जमींदार अपने मनमानी कारोबार के लिए शोषित वर्ग का शोषण कर रहा है और उसे राजनीतिक तथा पुलिस की सहायता मिलती है । इसके कारण समाज में शोषक और शोषित यह दो वर्ग बने हुए हैं ।

२) महाभोज में आतंकवाद --

समाज के हत्यारों ने अपने स्वार्थ के लिए समाज में आतंक फैलाया है । लोगों के घर, जमीन,गाय,बैल जमींदारों के यहाँ रहन में रखे हुए हैं । इतने पर ही इन लोगों का समाधान नहीं हुआ है । इनकी आवाज और जबान तक को इन लोगों ने अपने पास गिरवी रखी है ।

३) महाभोज में अन्याय और अत्याचार --

समाज में होने वाले अत्याचार सीमा पार कर चुके हैं । गुंडों और बदमाशों का अधिकार समाज पर है । लोकहीत या जनहीत की अपेक्षा स्वहीत के कारण सामाजिक स्थिति का चित्र करुणापूर्ण दिखाई देता है ।

४) पुलिस प्रशासन की रिश्वतखोरी एवं भ्रष्टाचार --

महामोज में यह देखा जाता है कि पुलिस प्रशासन में थानेदार से आई.जी. तक के अधिकारी भ्रष्टाचारी एवं रिश्वतखोर बने हुए हैं। रिश्वतखोरी के कारण ही बिसू की हत्या आत्महत्या में परिवर्तित होती है और अंत में बिसू हत्या का आरोप बिन्दा पर लगाकर उसे गिरफ्तार किया जाता है।

५) आम आदमी की सामाजिक विवशता --

जब समाज में गुंडों का ` गुंडाराज` चलता है तो आम आदमी का विवश हो जाना स्वाभाविक है। हरिजन टोला में आगजनी, बिसू की हत्या और बिन्दा की गिरफ्तारी आम आदमी की विवशता है। बिसू के बारे में देखे हुए सपने हीरा के बहते हुए आँसुओं के साथ बहकर जाते हैं। हीरा के बहते हुए आँसू आम आदमी के आँसू हैं, जो समाज के हत्यारों के कारण विवश बनकर बह रहे हैं।

इन समस्याओं को देखने के बाद यह बात हमारे सामने आती है कि महामोज में राजनीतिक नेता और उनके काले कारनामों के कारण आम जनता अन्याय और अत्याचार चुपचाप सह रही है। गुंडे गुंडाराज कर रहे हैं। सामान्य आदमी भयग्रस्त दिखाई देता है। जिन्दा आदमियों को जलाया जाता है, और गुनहगार जोरावर जश्न मनाता है।

राजनीतिक समस्याओं का चित्रण करना मन्नू भण्डारी का मुख्य उद्देश्य होने के कारण ` महामोज ` उपन्यास में राजनीतिक समस्याओं का चित्रण ही व्यापक रूप में हुआ है। साथ ही साथ सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया गया है। लेकिन महामोज में आर्थिक समस्या प्राय: न के बराबर है, फिर भी निम्न वर्ग के सामने जो आर्थिक समस्याएँ हैं उनको प्रस्तुत करने का लेखिका ने प्रयास किया है। ` महामोज ` उपन्यास में आर्थिक समस्या व्यापक रूप में नहीं है क्योंकि लेखिका का मूल उद्देश्य आर्थिक समस्याओं का चित्रण करना नहीं था, बल्कि राजनीतिक समस्याओं का व्यापकता के साथ चित्रण करना था।